दी शब्द इस 'बी जैनागम तरह दीविका' पुस्तक की

स्प्रमापृक्ति विजय सवन १६०५ में प्रकृतित हुई को । इस पुलक में ग्रहनेशा रहे रूप में जैनाओं भागवानी मानेक विपयों वा ११९० सम्माया गया है। जो विषय पहनोत्तर के रूप में सामग्रया जाता है वह रोषक हो जाता है भीर विपायियों को चार करने में बड़ी गुविया होती है। मान

व वह पुना के स्वताचन के कर स्वाचन स्वताचन स्व

सहोधन के लिए फरमाया ।

॥ भी बीतरागाच सम.॥ श्री जैनागम तत्त्व दीपिका

गमन्द्युन्दारकपुरक्वनितम् । जिनं नमस्त्रत्य जगञ्जनाचिनः तनोमि जैनागमनस्यदीपिपाम् ॥ १॥ भावार्य-चरण कमलों में सहये सिर भुकाते हुए देरनाची से बन्तिततथा पट्डायमप जगन् के रहर श्री जिन भगवान को ननस्कार कर में (पामीलाल सुनि।जैनामनरस्य दर्शनसः नामस्य सन्य रचना है ॥१॥

पहारविन्द्रीत्य सरन्तकन्त्रभा-





भी जैनागम सस्य शीपिका २०-पांच हैं-१श्रोबेन्द्रिय, २ चत्त्तरिन्द्रिय, ३ मारोन्द्रिय ४ रमनेन्द्रिय, ४ स्पर्शनेन्द्रिय । २४ मन्-एकेन्ट्रिय जीव किसे फहते हैं ? इञ्जिसके सिक्षे एक त्यरांन इन्द्रिय हो उसको एकेन्द्रिय जीव कहते हैं । जैसे प्रश्तीकात, धाकाय, तेडकाय. पायकाय चौर धनम्पतिराय । २४ प्रद-त्रमजीव किसे कहते हैं ,

ड॰-जो जीव श्रम नाम कमें के उरव में पल किर मरने हैं वर्धान् महीं गर्मी चादि दु हो से अपने की षचाने के लिए समनासमन पर सकते हैं उनसे द्रम जीय कहते हैं। २६ प्रत्यस के कितने मेद हैं १ इः- चार भेद हैं-द्वीन्त्रिय, वीन्त्रिय, चनुरिन्द्रिय चीर पद्मं न्डिय । २७ प्रव्हीन्द्रिय जीव किसे कहते है १

भी जेनागम सच्य दीविका (१)

गनवर, वेयर, इरवरिसर्च, मुजयरिसर्च, इनट भेट
सती (मधी) चीर खमती (समधी) वे भेद से दम.
इन दमी के पर्यात चीर खपवीन के भेद से पीम ।
इन प्रकार स्टार्ट्स चीर चीम मिल जाने से निवंस
व खड़त कीम भेद हा।

35 प्रक- प्रजीहारा विसे करते हैं?

पृथ्वी ही जिसका रादीर हो उसे पृत्वीकाय कहते हैं। जैसे स्वटिक, मणि, रतन, हिंगलु, हक्शल, सोना, पादी सावा 'लोहा, सीशा, सिट्टी, सुरह, स्वहिया, गेरू इत्यादि । '' 38 प्रद- प्रपुताय किसे कहते हैं ?

इ॰ स्वान से निरुलने धाली सब धरत स्वर्धात

३६ प्रट- व्यप्काय किसे कहते हैं ? उठ-व्यप् (जल)ही जिसका शरीर है. उसे व्यपकाय कहते हैं जैसर समाय कर मानी समाय प्राची सामग्री

कहते हैं जैसनालाव का पानी कुछ का पानी, बावडी का पानी खोले खोस इत्यादि।

भी जैनागम तस्य दीपिका

नहीं, भेटने से भेटाय नहीं, ऋष्ति में जल नहीं, दमरी बन्तु में रूके नहीं और इसरी की रोके नहीं. इदान्य

की नजर बावे नहीं और केवली भगवान के जान गम्य हो, उसे सहस करने हैं।

४४ प्रव-बादर किसे बहते हैं ?

प्रदेश बारत सामग्रेत के प्रत्य में बारत शरीर में रहते

हैं अर्थात को बाटने से बट जाय, छेड़ने से दिए जाय भैडने से भिड़ जाय, चानि में जल जाय, छुद्याश के

भी रुक्तिगानर हो।

४६ प्रत-बादर के कितने भेद हैं ?

२५- हो भेर-साधारण ग्रीर प्रत्येक ।

४७ प्रत-माधारण किसे यहने हैं .

उन्तिगोड को साधारण करते हैं। ∨= प्र निर्माट किसे बटने हैं ?

(03)



भी जैनाराम तत्त्व दीपिका

६०- प्र०- भवनपति के कितने भेद हैं ? प्रश्न भवनपति के पश्चीस भेट हैं-१ धमर-

क्रमार २ नागवमार ३ सुवर्णेक्रमार ४ विच_स-मुमार प्र क्यम्ति बुमार ६ द्वीपबुमार ७ उदधिकुमार म दिशानुसार ६ बायनुसार (पपननुसार) १० थरिएत (म्ननित)कसार। ये १० स्त्रीर चम्द्रह परमा-धार्मिक १५ १ द्यास्य २ द्यास्यरियी ३ इयाम

४ शवल. ४ रीइ. ६ महारीडू, ७ काल,= महा-पाल, १ द्यमिएय, १० धनप, ११ परम, १२ बालका. १३ वैतरसी, १४ स्वरस्वर स्वीर १४ महाशोष। सब मिलाकर भवनपृतियों के २४ भेड़ हैं। 🛪 🤊 ऋषे (चन्त्र)- नारकी के जीवी की सार

पीट करने है शिराने हैं और बोधकर खावाश में उद्यालने हैं। ३ श्रम्बरिमी(श्रम्बरिपी)कत्त्रभी से बतर बतर कर भूगने योग्य बरते हैं। इसामे



६२ प्रक दाणस्यन्तर देवों के कितने भेद हैं ' एक पाणस्यनर देवों के खरबीन भेद हैं -१

पिशाच, २ भूत, ३ जस. (यस), ४ रासम, ४ विकार, ह किम्परय, असहीरत, म गुरुष्य, ह श्चाणपण्या, १० पाणपण्या, ११ इमियाई (ऋपि-वादी), १२ भयबाई(भनवादी), १३ वर्षे, १४ महा-पन्दे,१५ बुद्धांड(बुप्मारह),१६ प्यगदेष(प्रेतदेव)। दम जुम्भक देवी के नाम १ चलजुम्भक २ पान-जम्भक ३ लयनजम्भक ४ रायनजम्भक ४ ध्य-जनभक्ष ६ फलजनभक्ष ७ पुष्पजनभक्ष ६ फलपुष्प-जम्भक ६ विक्तज्ञम्भक १० अग्निज्ञस्भक । शाल्मलीवृद्ध पर चढावर उन चिल्लात हुए नारविया

सात्मानीवृद्ध पर पदावर इन चिल्लान हुए मारवियों को सीवने हैं। ४४ महायोंसे (मरायोव) हर कर्मा भागने हुए नेरहयों को बाट से पातु क समान भवकर शब्द रहते हुए शेवन हु। व परहुट नाति के दश्या च्यानक्ष्मिय परिणामी होन से परमा जातिन प्रमुख मानि करनाते ह



भी जैनागम तस्य दीपिका (२१) उट-कहमिन्द्री को-कार्यात जिनमें छोटे दशें

उट-कहामन्त्री का-कथान जनम छाट का का भेट न हो उन्हें कल्पानीत कहते हैं। ह⊏ प्र≎-ब-पोप्पन्न के जितने भेद हैं? उट-कपोप्पन्न देशों के बाह्द भेद हैं-स्मीपमें

उ० करवायम त्याँ का बाह् भर ह- स्साध्म - इंगान ३ सनत्यास ४ माहेन्द्र ४ कालोक ह आनक ४१ म स्पष्टसार ६ चालून १० मालन ११ चारण १७ चरनुन। ६६ प्र०न्तीन किन्तिपिक कहाँ रहते हैं? उ०-यहत दूसरे देवलोक के नीचेनुका वीसरे

६८ अन्तान (कान्यापक कहा १६८ इट्ट इन्याद्ध दूसरी देखाँक के सीचेश्या वीसरे इंग्रजेक के सीचे, शुट देखनोक के सीचेश, तीन हिन्दिष्टक दरने हैं। इतिस्त्योधीयक, र प्रेमा-स्थादक, प्रयोदरासार्गाहक, ये उनके कम्मा-स्थाति के व्यन्तार ताम है। ७० प्रण्यानीन कितने प्रकार के हैं? इन्यानानीन हो इक्श्रण है हैन्द्र मेंदेयक और स्थानय सीचारी









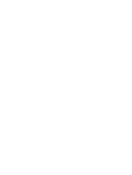


































भी जैन-गम मण्य दीपिका (**) हो, उसे काल द्रव्य कहते हैं अर्थात जो नवीन पो पुराना करे चौर पुराने को नष्ट करे। लेसे र्केची बस्त के स्वरूप को बदलने में सहकारी होती है। १४३ प्र०- समय किसे कहते हैं १ वः चत्यन सूच्य, जिसवा विभाग न ग मफं. हेसे बाल को समय कहते हैं। १४४ प्र०- त्यावलिका किसे कहते हैं ? ७० चर्मस्यात समय की चावलिका होती है। १४४ प्र०- सार्च किसे फहते हैं ? च>- एक करोड़, सहसठ लाख, सनहत्तर हजार नी मी मोला (१६७७५२१६) श्राप्तिका का एक सहते होना है १ १४६ प्र०- श्रहोरात्र किसे कहते हैं। एक तीस मुहुती का एक खहोरात्र (ए३ दिन चीर एक सांघ) होती है।



















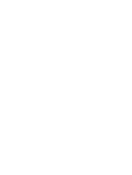






























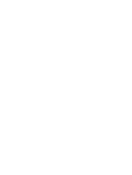














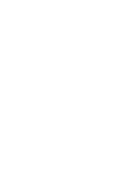
















श्रीजेनागम तत्त्व दीविका (803) च०-गहस्य वे: बालवची को घात्री (धाय माता)

की तरह देवला कर ब्याहरर देवता धार्थी होए हैं । ३३१ प्र०- दई (दनी) दीप किसे फहते हैं १

उ०- गृहस्य का गुन्न या प्रकट सदेश उसपे म्पजन चादि में बहुबर चाहार लेना हती दीप है। ३३२ प्र०- निमिन्ते (निमिन्त) दीप किसे

कहते हैं १

२०- गृहस्य को निर्मित्त द्वारा लाभ चलाभ धारि धनावर धाहार लेला निमित्त होत है ।

बर का खालार देवा काजीने लेल हैं।

३३३ प्र०- थाजीवे (थाजीवका) होप किसे

बहने हैं १ दर्भ यह हमारी जाति है या कल है . ऐसा



धी जैनागम तुच्य दीविधा (POY) उन्- में लिखिमान हैं, हुम्हें सरम चाहार लावर

द्या. माध्यो से ऐसा बहुबर बाहार लाना मान शेष है। ३३८ प्र०- माये (माया-विगट) दीय किमे

कहते हैं १ इल्लाहरू सप्तर करके साहार केला साथा दीव है। ३३६ प्र०- लोहे (लोम-पिएड) दोप किस

यहते हैं १ ९०- लोभ में कथित काहार लेता लोभ होए है।

प्र०- पर्व्विषच्छामंथव (पर्वप्रधात-सस्ततः द्वीप क्रिसे कहते हैं। १

ज्याहार क्षेत्र के प्रश्ले या प्रीधे शाला की ेमाप धरवे श्राहार सना प्रायम रामधवराय है

३४१ प्र०- विका (विद्यापिएट) दीप दिसे



भी जैनासम तथय दीपिका २ छेटोपम्यापनीय चारित्र, ३ परिहारविशक्ति-चार्त्व, ४ सरमसम्पराय चार्त्व ४ यथान्यात আছি ३६= प्र०- श्रतिक्रम क्रिसे प्रध्ते हैं १

देश कर को प्रक्रपण करने के सदस्य की कतित्रस कहते हैं। ३६६ प्र०- व्यतिक्रम किसे बहते हैं ? दक्ष द्वत को उन्लयन करने के लिए कायिक

व्यापार को प्रारम्भ करना न्य'तकम कहलाता है। ३७० प्र०- श्रतिचार किमे बहते हैं १

उ०- व्रत को भग करने की सामग्री इकटी

करना तथा एक देश धन भग करना द्यनियार **कटलाता है** ।

३७१ प्रवन् धनाचार किसे फहते हैं १ उ॰ वर को सर्वेशा करा करता खताचार है।









भी जनागम तुरव दीपिदा सद्दायना सचाहना . ३ महात्य. नियम और देवना के रुपमां काने पर भी धर्म में स्टरहना.श्रांतन. धरे वे शहा बाला विविधास स बहता ४ जिनक की के उपयोग महित कादा बहुता, ह जिन धमें में हाइ हाइ की मिली स्पना, ७ व्यविद्यामी के घर नहीं जाता. य दान देने के लिए सहा

হলজালুৰা ২০ হ্যালুৰা ২২ ফীন্যত্তিকৰ (হাান্ৰ नत्रर) १२ ध्यस्मरता (ईप्यो न करना) गुणान-रामिना ६४ सत्यवादियन १४ मुक्त्या (स्वाय वर्ष का मदल) १६ दीपेद्रशिता (बागे पीछ का

गहरा विचार करता) १० विशेषक्षता (प्रत्येक रूच की बारीक राति से कानजा) १८ वदान-

गतना (शिहों की परस्परा का पालन करना) १६ विजियना (विनिधवान होना) २० हत्रज्ञता (दृश्री से क्ये का उपकार को सभाजना। २१ परहित-

क्षांतिना (प्रशेषकार करूना ।





